CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Research Paper

Received on 31.08.2022
Reviewed on 06.09.2022
Accepted on 12.09.2022

# बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों की भूमिका

*लता शर्मा

**प्रस्तावना**

जिस प्रकार एक शरीर का निर्माण असंख्य उत्तकों से होता है उसी प्रकार एक राष्ट्र का निर्माण वहाँ के बच्चों से होता है। अतः प्रारम्भ से ही शिक्षा के समुचित अवसर दिये जाने आवश्यक हैं ताकि वे अपने क्षेत्र में योग्यता सिद्ध कर सकें। यही कारण है कि वर्तमान में जहाँ उच्च शिक्षा की सुविधाऐं उपलब्ध हैं वहां शिक्षा प्राप्त करते हैं लेकिन दूर दराज के क्षेत्रों में रहने वाले छात्राओं को जब अपने गांवों/कस्बों में अच्छा वातावरण व अच्छा विद्यालय नहीं मिल पाता है तो वे बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में रहकर अध्ययन करते हैं।

शिक्षा वह फूल है जिसकी सुगन्ध रूपी ज्ञान से व्यक्ति समाज में महकता है। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन के लिए नहीं होती वह ऐसी क्षमता है जो मनुष्य को जीवन पर्यन्त जिज्ञासु बनाये रखती है। शिक्षा साधना है। उपासना तथा परायणता है। शिक्षा की सार्थकता व्यक्ति के व्यक्तित्व को सुन्दर बनाती है।

एडीसन ने भी शिक्षा की गहनता दर्शाते हुए कहा है कि ''संगमरमर के पत्थर के लिए जो महत्व मूर्तिकार का है वही महत्व आत्मा के लिए शिक्षा का है।''

''विद्यालय एक बाग है, शिक्षक उसका माली है और हर पौधा विद्यार्थी है।'' जिस तरह बाग है उसी प्रकार विद्यालयों में भी विभिन्न विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन का कार्य शिक्षक को करना पड़ता है। शिक्षक विद्यार्थियों के भाग्य का निर्माता होते हैं।

हमारी सरकार विभिन्न प्रकार की परियोजनाओं द्वारा बालिका–शिक्षा के लिए सतत् प्रयास कर रही है। इन प्रयासों में बालिकाओं के कार्यक्रम अध्यापिकाओं के कार्यक्रम चलाए जाते हैं एवं जन सहभागिता द्वारा यह प्रयास किया जाता है कि अधिक से अधिक बालिकाऐं शिक्षा से जुड़ सकें। इन सबके बावजूद यह देखने में आया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक ऐसी बालिकाऐं हैं जिन्होंने शिक्षा का अवसर खो दिया है और वे इस उम्र पर हैं जो प्राथमिक शिक्षा की प्रारम्भिक कक्षा में पढ़ने योग्य नहीं है। अतः 9 से 14 वर्ष आयु वर्ग की इन किशोरवय बालिकाओं के लिए आवासीय शिक्षण शिविर लगाये जाते हैं। इन बालिकाओं को औपचारिक शिक्षा के पाठ्यक्रम से अध्ययन कराते हुए स्वच्छता, व्यक्तिगत स्वास्थ्य और मिलजुल कर रहते हुए समस्याऐं हल करने, स्वयं को अभिव्यक्त करने और अपनी आकांक्षाओं और दृष्टिकोण को विस्तृत करने के बारे में सिखाया जाता है।

वर्ष 1997 में प्रायोगिक तौर पर 4 आवासीय शिविरों का आयोजन किया गया। जिसके लिए घर–घर जाकर बालिकाओं के माता–पिता से संपर्क कर और समुदाय को विश्वास में लेकर किशोरी बालिकाओं को शिविर में लाया गया। शिविर से पूर्व गहन तैयारी, प्रशिक्षण स्थल का चयन शिक्षिकाओं का चयन आदि सभी कार्य कर लिये जाते हैं। शिक्षिकाओं के चुनाव में उनकी

शैक्षिक योग्यता 12वीं पास के साथ–साथ शिक्षण में उनकी अभिवृत्ति, अभिरूचि और कार्य के प्रति निष्ठा का विशेष ध्यान रखा जाता है।

एक शिक्षण शिविर में सामान्य तौर पर 100 बालिकाओं की व्यवस्था होती है। उनको पढ़ाने के लिए विशेष रूप से चयनित 7 शिक्षिकाऐं आवासीय रूप से उन बालिकाओं के साथ रहकर केवल पढ़ाती ही नहीं है बल्कि संस्कार अच्छी आदतों और स्वास्थ्य संबंधी मसलों पर भी उन बालिकाओं से चर्चा करती है। सभी बालिकाओं को 7 समूहों में बांटकर शिक्षण कार्य किया जाता है। यह समूह साप्ताहिक मूल्यांकन के आधार पर बनते बिगड़ते रहते हैं। अध्यापिकाओं को शिक्षण कार्य में नवाचार और नयी विधाओं का प्रयोग करने की पूरी स्वतन्त्रता होती है। शिविर में शिक्षण का माध्यम प्रारम्भ में तो स्थानीय भाषा और बाद में मानक भाषा होती है। बालिकाओं को पाठ्यपुस्तकें, कॉपियां, स्लेट, पेसिंल, रंग आदि निःशुल्क रूप से दी जाती है। ड्रेस एवं अन्य सुविधाऐं जन सहयोग से जुटायी जाती हैं। शिक्षण के साथ बालिकाओं के दैनिक खेल, रोचक गतिविधियां एवं अन्य सहगामी क्रियाऐं भी होती हैं जिससे शिक्षण में रूचि जागृत होती है अर्थात् शिक्षण कार्य को रूचिकर और प्रभावी बनाने का पूर्ण प्रयास होता है। सहगामी क्रियाओं के माध्यम से बालिकाऐं बदले हुए वातावरण में अपने को ढाल पाती हैं और पढ़ने के लिए भी मानसिक रूप से तैयार हो जाती है।

बालिका शिक्षा के विकास में अनेक परियोजनाऐं कार्य कर रही हैं बहुत से अभियान भी चलाए जा रहे हैं अर्थात् शिक्षा से सभी को जोड़ने के लिए हर सम्भव प्रयास किया जा रहा है। इसी प्रक्रिया में सूक्ष्म नियोजन से ज्ञात हुआ है कि मरूस्थलीय एवं दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी अधिकांशतः किशोर बालिकाऐं ऐसी हैं जो शिक्षा से वंचित है और इन बालिकाओं के शिक्षा से न जुड़ पाने के कारण हैं–

- बालिकाओं का औपचारिक विद्यालय में प्रवेश की उम्र पूरी कर लेना एवं अपने से छोटी उम्र के बच्चों के साथ कक्षा में बैठकर पढ़ने में असहज अनुभव करना
- छितरी हुई आबादियों में विद्यालय का न होना
- भाषाई एवं सामाजिक कारणों से विद्यालय के अन्य बच्चों के साथ समन्वय नहीं कर पाना।

ऐसी बालिकाओं के लिए औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा व्यवस्था से हटकर एक विशिष्ट प्रकार की वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था महसूस की गई और ऐसी किशोरवय बालिकाओं के लिए जिस व्यवस्था को किया गया उसे बालिका आवासीय शिक्षण शिविर अभिहित किया गया। बालिका शिक्षा के विकास के लक्ष्य को लेकर राजस्थन में एक अभिनव प्रयोग बालिका शिक्षण शिविर के रूप में प्रारम्भ हुआ। इस सफल प्रयास में सात माह के आवासीय शिविरों के माध्यम से शिक्षा से वंचित बालिकाओं को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ा जा रहा है तथा वर्तमान में विभिन्न विकास खण्डों में ऐसे शिविर चल रहे हैं।

इन शिविरों में 9 से 14 आयु वर्ग की ऐसी बालिकाऐं जो विभिन्न कारणों से औपचारिक विद्यालय से नहीं जुड़ सकी हैं उन्हें 7 माह के आवासीय शिक्षण शिविर में प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्रदान कर उच्च कक्षाओं में प्रवेश दिला शिक्षा की मुख्य धारा में जोड़ा जाता है। शिविर में बालिकाओं की संख्या 50 अथवा 100 होती है।

**समस्या का औचित्य**

हमारे देश में शिक्षा के विकास के लिए विद्यालयों के साथ–साथ अनेक प्रकार के शिक्षण शिविरों का विकास हो रहा है। जिसमें आवासीय शिक्षण शिविर प्रमुख हैं। जो बालिकाऐं कुछ परिस्थितियोंवश विद्यालय में नहीं जा पती हैं तो ऐसी बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने के लिए ये आवासीय शिक्षण शिविर किस प्रकार सशक्त माध्यम बनते हैं तथा इन आवासीय शिक्षण शिविरों में नामांकन पश्चात् बालिकाओं में क्या व्यवहारगत परिवर्तन आते हैं,ऐसी समस्या और उनका समाधान प्रस्तुत शोध में किया गया है। वर्तमान आधुनिक युग में इस लघु शोध की समस्या प्रासंगिक और औचित्यपूर्ण है क्योंकि आज समाज में आम धारणा का

इस प्रकार विकास हुआ है कि शिक्षा के सार्वजनीकरण में बालिका शिक्षण शिविर के माध्यम से ज्ञान का प्रसार एवं प्रचार का प्रयास किया जा रहा है।

**समस्या अभिकथन**

बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों की भूमिका

**अध्ययन के उद्देश्य**

1. बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण की भूमिका का अध्ययन करना।
2. बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में बालिकाओं के सहशैक्षिक गतिविधियों का अध्ययन करना।
3. बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में बालिकाओं की खेलकूद सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन करना।
4. बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में बालिकाओं की साहित्यिक सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन करना।
5. बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों में बालिकाओं की सांस्कृतिक गतिविधियों का अध्ययन करना।

**अध्ययन की परिकल्पनाऐं**

1. बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों में अध्ययनरत बालिकाओं की सहशैक्षिक गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों में अध्ययनरत बालिकाओं की खेलकूद सम्बन्धी गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
4. बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों में अध्ययनरत बालिकाओं की साहित्यिक गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
5. बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों में अध्ययनरत बालिकाओं की सांस्कृतिक गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

**शोध अध्ययन का परिसीमन**

1. प्रस्तुत शोध में जयपुर के बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों का चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों की भूमिका को जानने के लिए स्वरचित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

**शोध से सम्बन्धित अध्ययन**

1. **शर्मा एवं सपरा (2018) : प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन**

प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन सम्बन्धी अपने अध्ययन में पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली के 92 स्कूल का न्यादर्श लेकर किए गए सर्वेक्षण में यह पाया गया कि अभिभावकों की निरक्षरता एवं गरीबी व घरेलू वातावरण आदि प्रमुख कारण हैं बालकों के स्कूल छोड़ने के।

**2. खान (2019) : प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय व संशोधित अध्ययन**

यूनेस्को द्वारा प्रस्तावित शोधकार्य में यह पाया कि प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय संबंधी प्रमुख कारणों में विद्यालयी स्थानीय व भौगोलिक कारण उत्तरदायी हैं। इसी प्रकार प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण में आने वाली बाधाओं के अनेक शोध अध्ययन हुए हैं।

**3. दास, आर.सी. (2018) : विद्यालय की भौतिक सुविधाओं का बच्चों की नियमित शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन**

इनके बच्चों का मुख्य उद्देश्य यह था कि विद्यालय की भौतिक सुविधाओं का बच्चों की नियमित शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ता है? अध्ययन के निष्कर्षों में यह पाया गया कि विद्यालय की भौतिक सुविधाओं का बच्चों की नियमित शिक्षा पर अत्यन्त प्रभाव पड़ता है।

**4. दास, आर.सी. (2019) : आसाम के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा का अपव्यय**

आसाम के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा के अपव्यय संबंधी अध्ययन में यह पाया गया कि अपव्यय के प्रमुख तौर पर पढ़ाई बीच में ही छोड़ने वाले विद्यार्थियों की समस्या थी जिसमें कुल शहरी क्षेत्र का अपव्यय 63.2 एवं ग्रामीण क्षेत्र का अपव्यय 78.08 प्रतिशत पाया गया।

**5. मंडल जे.एल. (2020) : बिहार में प्राथमिक शिक्षा की समस्याऐं और समाधान**

एक अध्ययन इन्होंने बिहार में अनिवार्य व निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की समस्याओं के उपायों पर अध्ययन किया। समस्या का प्रमुख उद्देश्य अनिवार्य व निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की योजनाओं का क्रियान्वयन तथा आने वाली बाधाओं के सम्बन्ध में उपाय जानना था। अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया गया कि प्रथम दो कक्षाओं में विद्यालय छोड़ने वाले, बीच में पढ़ाई छोड़ने वाले बालक–बालिकाओं का प्रतिशत अत्यधिक पाया गया। प्राथमिक व अनिवार्य शिक्ष्द्वाा में आने वाली बाधाओं में पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि में धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।

**बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों में स्थल की उपयुक्तता**

| | हाँ | नहीं | कभी–कभी |
|---|---|---|---|
| बालिकाएँ | 100 | – | – |

सारणी 4.1 में आवासीय शिक्षण शिविर स्थल की उपयुक्तता को दर्शाया गया है।

उपयुक्त सारणी 4.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बालिका आवासीय शिक्षण शिविर के स्थल की उपयुक्तता से सभी अर्थात् शत प्रतिशत अध्यापिकाऐं सन्तुष्ट हैं 100 प्रतिशत के हाँ के जवाब से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में किए गए तीनों आवासीय शिक्षण शिविर उपयुक्त स्थल पर हैं।

**बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में बालिकाओं द्वारा स्वयं का समायोजन**

| | हाँ | नहीं | कभी–कभी |
|---|---|---|---|
| बालिकाएँ | 100 | – | – |

सारणी 4.2 में आवासीय शिक्षण शिविर के समायोजन को दर्शाया है। सारणी 4.2 का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि – शिविर में बालिकाओं के समायोजन को लेकर शत–प्रतिशत अध्यापिकाऐं सहमत थीं। लेकिन सभी बालिकाओं का मत यह भी था कि प्रारम्भ में बालिकाओं को कठिनाई होती है किन्तु कुछ दिनों बाद वे सब आसानी से शिविर के वातावरण में स्वयं को समायोजित कर लेती हैं।

**बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों से बालिकाओं के व्यवहार में परिवर्तन**

| | हाँ | नहीं | कभी–कभी |
|---|---|---|---|
| बालिकाएँ | 100 | – | – |

सारणी 4.3 में आवासीय शिक्षण शिविर में बालिकाओं के व्यवहार में परिवर्तन को दर्शाया गया है। सारणी 4.3 के तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि इन आवासीय शिक्षण शिविरों से बालिकाओं के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है इस तथ्य से सभी शत–प्रतिशत बालिकाएँ सहमत हैं और वे मानती हैं कि शिविर में आने के बाद उनके व्यवहार में काफी परिवर्तन आया है और उनको नियम अनुशासन में बांधने की जरूरत ही नहीं पड़ती है अर्थात् सभी बालिकाऐं एक दूसरे को सहयोग करती हैं।

**शिक्षण शिविर में आने के बाद बालिकाओं के स्वभाव में बदलाव**

| | हाँ | नहीं | कभी–कभी |
|---|---|---|---|
| बालिकाएँ | 100 | – | – |

सारणी 4.5 में शिविर में आने के बाद बालिकाओं के स्वभाव में बदलाव को दर्शाया गया है। सारणी 4.5 का विश्लेषण करने पर विदित होता है कि शिविर में आने के बाद बालिकाओं के स्वभाव में निश्चित रूप से बदलाव आया है ऐसा शत प्रतिशत बालिकाएँ मानती हैं सभी बालिकाओं के अनुसार समस्त बालिकाओं में अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा एक दूसरे के प्रति सहयोग, स्वावलम्बन आदि आदतें देखने को मिलती हैं।

**शिक्षण शिविर में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन**

| | हाँ | नहीं | कभी–कभी |
|---|---|---|---|
| बालिकाएँ | 100 | – | – |

सारणी 4.5 में शिविर में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन को दर्शाया गया है। सारणी 4.5 के विश्लेषण से पता चलता है कि शिविर में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम को लेकर सभी शत प्रतिशत बालिकाएँ एकमत हैं। नागौर स्थित बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में तो प्रत्येक रात्रि को 2 घन्टे सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाया जाता है जिसे वहां की बालिकाओं ने चेतना सत्र के नाम से नियमित समय सारणी में सम्मिलित किया है जबकि बीकानेर स्थित आवासीय शिविर में अनेक अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाए जाते हैं।

**न्यादर्श**

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर के 3 बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों में 100 बालिकाओं को लिया गया है तथा प्रत्येक शिविर में 10–10 बालिकाओं का साक्षात्कार किया गया है।

**अध्ययन में प्रयुक्त विधि :** प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

**उपकरण :**

प्रस्तुत अध्ययन में बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों की भूमिका को जानने के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

**परिकल्पनाओं की जाँच एवं निष्कर्ष**

1. **जयपुर जिले के बालिका आवासिय शिक्षण शिविर में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।**

   100 बालिकाओं पर डाली गई प्रश्नावली में सभी ने बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों की भूमिका पर सहमति परिलक्षित की। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बालिका आवासीय शिक्षण शिविर प्राथमिक स्तर के विद्यालयों से बहुत आगे है और बालिका शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः जयपुर जिले के बालिका आवासिय शिक्षण शिविर में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. **जयपुर जिले के बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में अध्ययनरत बालिकाओं की सहशैक्षिक गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।**

   100 बालिकाओं पर डाली गई प्रश्नावली में सभी ने सहशैक्षिक गतिविधियों में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों की भूमिका पर सहमति परिलक्षित की। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बालिका आवासीय शिक्षण शिविर प्राथमिक स्तर के विद्यालयों से बहुत आगे है और बालिका शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः जयपुर जिले के बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में अध्ययनरत बालिकाओं की सहशैक्षिक गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3. **जयपुर जिले के बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में अध्ययनरत बालिकाओं की खेलकूद गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।**

   शत–प्रतिशत बालिकाओं के लिए खेलकूद सम्बन्धी गतिविधियों के आयोजन पर सहमति प्रदर्शित की। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों में बालिकाओं के शारीरिक विकास के लिए खेलकूद सम्बन्धी गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। अतः जयपुर जिले के बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में अध्ययनरत बालिकाओं की खेलकूद गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

4. **जयपुर जिले के बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में अध्ययनरत बालिकाओं की साहित्यिक गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।**

   शत–प्रतिशत बालिकाओं के लिए साहित्यिक सम्बन्धी गतिविधियों के आयोजन पर सहमति प्रदर्शित की। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों में बालिकाओं के मानसिक विकास एवं शैक्षिक विकास के लिए साहित्यिक सम्बन्धी गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। अतः जयपुर जिले के बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में अध्ययनरत बालिकाओं की साहित्यिक गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

5. **जयपुर जिले के बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में अध्ययनरत बालिकाओं की सांस्कृतिक गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।**

   शत–प्रतिशत बालिकाओं के लिए सांस्कृतिक सम्बन्धी गतिविधियों के आयोजन पर सहमति प्रदर्शित की। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों में बालिकाओं के मनोरंजन विकास के लिए सांस्कृतिक

गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। अतः जयपुर जिले के बालिका आवासीय शिक्षण शिविर में अध्ययनरत बालिकाओं की सांस्कृतिक गतिविधियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

**भावी शोध हेतु सुझाव**

- बालिका शिक्षा के विकास में बालिका आवासीय शिक्षण शिविरों के साथ–साथ गैर आवासीय शिक्षण शिविरों की भूमिका का भी अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले को लिया गया है जबकि अन्य जिलों को भी अध्ययन के लिए लिया जा सकता है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. अग्रवाल, संध्या; ''**शिक्षा मनोविज्ञान''**, विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी, 2005
2. भार्गव महेश; **"मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन"**, हरप्रसाद भार्गव बुक हाउस, शैक्षिक प्रकाशन, आगरा, 1997,
3. भटनागर ए.बी., भटनागर मीनाक्षी; **"भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास"**, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, 2006
4. भटनागर सुरेश; ''**शिक्षा मनोविज्ञान''**, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ 2008
5. भटनागर सुरेश; **''अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार''**, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2005
6. बेस्ट जॉन डब्ल्यू; ''**रिसर्च इन एजूकेशन"**, प्रेक्टिस हॉल, (इंक) ऐंगिल बुक क्लिफस, यू.एस.ए., 1958
7. बोर्ग डेलनपेन; **"अण्डर स्टेडिंग एजुकेशन रिसर्च"**, मेक्ग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क, 1958
8. दत्ता संजय; ''**शिक्षा–मनोविज्ञान में अधिगम एवं व्यक्तित्व''**, जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर, संस्करण–2005
9. क्रेच एवं क्रचफील्ड; **"थ्यौरी एण्ड प्राब्लम्स ऑफ सोशल साइकोलॉजी"**, मैग्राहिल पब्लिकेशन, न्यूयार्क 1948.
10. गुड, वी. कार्टर और स्केट्स डी.ई.; **"मैथड्स ऑफ रिसर्च"**, एप्लटन सेन्चुरी क्राफ्टस (इंक), न्यूयार्क, 1954.
11. गुडे एवं हॉट; **"मैथडस इन सोशल रिसर्च"**, मेग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क, 1962,

***Corresponding Author***
*लता शर्मा, *शोधार्थी*
*श्याम विश्वविद्यालय, दौसा, राजस्थान*
*Email:* advocatelatasharma1986@gmail.com, *Mob.-9610489622*